International Journal of Sanskrit Research 2021; 7(1): 315-317

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2021; 7(1): 315-317
© 2021 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 05-11-2020
Accepted: 15-12-2020

सुखदेव
शोध-छात्र, वी.वी.बी.आई.एस. एण्ड आई.एस. साधु आश्रम, होशियारपुर पञ्जाब विश्वविद्यालय, पञ्जाब, भारत

Corresponding Author:
सुखदेव
शोध-छात्र, वी.वी.बी.आई.एस. एण्ड आई.एस. साधु आश्रम, होशियारपुर पञ्जाब विश्वविद्यालय, पञ्जाब, भारत

भीमप्रबन्धमहाकाव्य में धार्मिक स्थिति

सुखदेव

मण्डोवरपञ्चकुण्ड वैजनाथ मण्डलेश्वर भोगशैल और नागनदी यात्रा का वर्णन - भट्टहरिवंश विरचित भीमप्रबन्ध महाकाव्य में तात्कालीन धार्मिक स्थिति का बहुत ही सुन्दर वर्णन किया गया है। राजा भीम के महल के सामने एक चबूतरी बनी हुई है उसके साथ ही दाडिम की वाटिका है। उसकी दक्षिण दिशा में नगर सुशोभित है और पूर्व की ओर नाग नदी बहती है। प्राचीन काल में उस नदी में दो बड़े नाग निकल कर पृथ्वी पर आये और अपने मुँह की फुंफकार से उन्होंने लोगों को नष्ट किया और इन्द्र सहित देवताओं को भयभीत कर दिया। ये सर्प दिन में अपने बिल में विचरण करते हैं और रात्रि के तीन प्रहर बाहर घूमा करते हैं। चौथे प्रहर में वात पित्त कफात्मक हो जाते हैं। कुछ सर्प दो कोस भर शरीर वाले, कुछ नल्व अर्थात् दूरी मापने के माप (400 हाथ लम्बा) के समान देह वाले कुछ उसके आधे-आधे शरीर धारण किये महान विष से युक्त दुष्ट स्वभाव वाले हैं। इन सर्पों में से कुछ सर्प शेषनाग के कुल में उत्पन्न होने वाले थे तो कुछ वासुकि, तक्षक, पुण्डरीक, शङ्ख तथा कर्कोटक आदि सर्पों के कुल में उत्पन्न होने वाले थे। ब्रह्मा ने जब संसार में जब इस तरह के साँपो का उपद्रव होते देखा तो उन्होंने भोगिशैल को पुत्र प्रदान करने का आदेश दिया। उसके उपरान्त पिता द्वारा आज्ञा प्राप्त करने वाला भोगिशैल देवों के द्वारा स्तुति किया जाता हुआ वह नाग बिल में प्रवेश कर गया। उस भोगिशैल पर्वत पर समस्त देवताओं की कृपा से नागों के साथ भगवान् शकंर ने निवास किया श्रेष्ठ तीर्थों वाली नदियों के साथ नाग देवी ने भी निवास किया।[1] पश्चिम दिशा में वर्णाश्रम धर्म में विचरण करने वाले सज्जन लोग रहते हैं जो वहां स्थित होकर परमात्मस्वरूप को प्राप्त करने के लिए तत्पर रहते हैं। कहीं पर सिर मुंड़ाये हुए सन्यासी कहीं जटाधारी तपस्वी लोग तप का आचरण करते हैं और उसके आगे यवनों के आवास है वे भी परमपद को प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं।

उसके आगे देशान्तरों से आये हुए राजाओं और उनकी पत्नियों का देव सदन के तुल्य पुण्य आश्रम सुशोभित है। उसके आगे सिद्धेश्वरी जगदम्बा का महान् क्षेत्र है जिसमें स्नान तथा जप आदि करने का हजार गुना पुण्य प्राप्त होता है। ऐसा व्यास के द्वारा बताया गया है। जहाँ पर स्थित पाँच बड़े सरोवर पंच कुण्ड नाम से संसार में प्रसिद्ध है जिसमें किये गये श्राद्ध, जप आदि का प्रयोग से भी अतिरिक्त फल होता है। उसके आगे एक कोस बाद जगदीश्वर बैजनाथ का मन्दिर है। भक्ति भाव से अर्चना किये जाने पर वह धन, सम्पत्ति, पुत्र इत्यादि सम्पूर्ण कामना को पूरा करते हैं। तत्पश्चात् पूर्व दिशा में महाप्रभावशाली भगवान शिव का मण्डलनाथ नाम का जाना माना मन्दिर है। उनके दर्शन, ध्यान, जपादि मात्र से मनुष्य शीघ्र ही भवसागर से पार हो जाता है।[2]

वहीं पर भोगिशैल नामक पर्वत है जो पर्वत बीस कोस तक फैला हुआ है उस पर्वत को कवि लोग भोगिशैल पर्वत कहते हैं। उस पर्वत के अधिपति भगवान् शिव कहे जाते हैं जो वहाँ स्थित लोगों का कल्याण करते हैं। ऐसा वह पर्वत जो कि पंचकुण्ड तथा भगवान् शिव से सुशोभित होता है उसके आँगन में उत्पन्न होने वाली नदियाँ नागधुनी की ओर प्रवाहित होती हैं। वे नदियाँ नागधुनी को धारण किये हुये शिलातलों से प्रवाहित होती हुई कल-कल की आवाज करती हुई नीचे की तरफ जाती हैं। उसके आगे पूर्व राजाओं के द्वारा स्थापित किया हुआ कालान्तर में आने वाले देवताओं के भवन के तुल्य महान् आश्रम सुशोभित होता है। उस आश्रम में आम, दाड़िम, केले और खजूर आदि के अनेक छोटे-बड़े वृक्ष हैं जिस पर पक्षियों का समूह कलरव करता है। पूर्व के राजा लोग जो इन्द्र के समान पराक्रमी थे अपनी पत्नियों के साथ उन आश्रमों में निवास करते हुये भगवान की पूजा करते हुये अपने सम्पूर्ण मनोरथ को प्राप्त किया करते थे। वहाँ पर स्वच्छ जल से भरे हुये सुरम्य, प्रसिद्ध देवल बावड़ी बनी हुई है जो इमली के वृक्षों से आच्छादित तथा सदैव बन्दरों के संकुल से घिरी हुई है।[3] उसके आगे दक्षिण दिशा में पूर्व तट पर शोभित स्वच्छ जल से परिपूर्ण काल भैरव की बावड़ी है।[4] पर्वतों से घिरती पृथ्वी पर प्रवाहित होती हुई दूर से ही पुंज के समान दिखाई देने वाली नदियाँ पूर्व दिशा की ओर प्रवाहित होती हैं।[5] सर्पों के भय से रहित इन नदियों में शुक्ल पक्ष में स्नान, श्राद्ध तथा पितृ तर्पण आदि कार्य करने से गया तीर्थ में स्नानादि करने के समान फल मिलता है। जो इस कथा को पढ़ता या सुनता है वह पुत्र कीर्ति और धन को प्राप्त करता है इसके अतिरिक्त सौ गायों को दान करने के समान फल प्राप्त करता है। इसी प्रकार नाग नदी में भी स्नान, दान और तर्पण से लोग गंगा आदि तीर्थों में किये गये स्नान, दान और तर्पण के समान पुण्य प्राप्त करते हैं।[6] सभी लोग विवाह के समय विविध प्रकार की वेशभूषा धारण किये हुये के समान चेष्टा करते हुये सुशोभित होते हैं। नदियों का अभिषेक करते हुये ब्राह्मण श्रेष्ठों को गाय, सोना, वस्त्र, फल और भोजन प्रदान करते हुये देवताओं, ऋषियों और पित्तरों को तर्पण करते हुये उत्सवों का आयोजन करते थे। श्रेष्ठ ऋतु के समान भोजन करके और जल पीकर नृत्य गानादि करते हुये स्त्रियाँ थककर विश्राम करती हैं तथा पुरूष नगर की ओर प्रस्थान करते हैं। इस प्रकार नागपंचमी की यात्रा संसार में प्रसिद्ध है। जो कोई मनुष्य इस नाग नदी में स्नान करता है वह विशुद्धचित् हो जाता है। कवि कहते हैं कि जो भी इस कथा को भक्ति भावना से कहता या सुनता है वह पुत्र, कीर्ति तथा धन को प्राप्त कर मरणोपरान्त विष्णुलोक या शिवलोक को जाता है।[7]

गौरी हिमाद्रौ गिरीशं समीक्ष्य ध्याने रतं रन्तुमनाः सखीभिः। सर्वस्त्विला वृत्तमथोऽभिजग्मुर्विक्रीडयित्वा च पुनः प्रतीयुः।।[8]

भगवती पार्वती हिमालय पर्वत पर भगवान शिव को समाधि लगाये हुये देखकर अपनी सखियों के साथ उनसे प्रेमपूर्वक आलाप करने की दृष्टि से उनके

पास गई और थोड़ी देर क्रीड़ा करके पुनः वापस आ गई। पुरूष और स्त्रियाँ इस प्रकार क्रीड़ा करके अनेक प्रकार के गीतों का गायन करते हुये आलौकिक आश्चर्य से परिपूर्ण स्वरूप को देखकर अत्यधिक आनन्दित हो रहे थे। इस प्रकार उन लोगों ने भगवती पार्वती की अत्यधिक सम्मानपूर्वक और पूर्ण रीति से अर्चना पूजा की। महाराज भीम सिंह ने भी इस उत्सव को देखकर प्रसन्नचित्त होकर अपने महल में प्रवेश किया। उसके पश्चात उन गौरियों ने महाराज भीम सिंह को यह आशीर्वद दिया कि आप स्वकुलोचित पुत्र प्राप्त करें। ऐसा वर देकर उन्होंने अपने-अपने घरों की ओर प्रस्थान किया। इसी समय हजारों भेदियाँ, डमरू, नाल दुन्दुभि आदि बजने लगे और नगर की स्त्रियों ने उन गौरियों के सम्मुख अलग-अलग ढंग से गीत गाये। वास्तव में कहा जाता है कि यह गौरी और शिव का महोत्सव जय प्रदान करने वाला है और साथ में शत्रुओं का विनाश करने वाला है। अतः जो कोई भी व्यक्ति प्रेमपूर्वक, भक्तिपूर्वक इसका श्रवण या पठन करता है वह उत्तम पुत्र, पौत्र एवम धन-धान्य से परिपूर्ण हो जाता है।[9]

कवि कहते हैं कि भोगिशैल, नागनदी, निम्बतीर्थ नामक पवित्र स्थानों पर राजा भीम ने हाथी, घोड़े, गाय, बकरी और श्रेष्ठ भैंसे ब्राह्मणों को प्रदान की। इन्होंने सप्तदान का तुलादान तथा पुष्कर क्षेत्र में किये जाने वाले अन्य दान भी पञ्चकुण्ड के समीप महनीय वेदों के विद्वानों को अर्पित कर दिये।[10]

अतः अन्त में यही कहा जा सकता है कि भट्टहरिवंश भीमप्रबन्ध महाकाव्य में धार्मिक वर्णन कवि द्वारा विस्तार से किये गया हैं इसलिए यह एक उत्कृष्ट कोटि का महाकाव्य है।

संधर्व सूची

1. भी.प्र.महा.का., 10.1-7
2. भी.प्र.महा.का., 10.9-15
3. भी.प्र.महा.का., 10.16-22
4. वही, 10.24
5. वही, 10.26
6. वही, 10.29-31
7. भी.प्र.महा.का., 10.32-37
8. वही, 12.25
9. वही, 12.61-65
10. भी.प्र.महा.का., 16.13-14